निर्मल ग्राम योजना

राजनांदगांव पैटर्न

हमें स्वतंत्रता प्राप्ति हुए आज 55 साल से भी अधिक समय हो गया है । यह एक विचित्र विडम्बना है, कि आज भी गांव की महिलाएं, लड़कियां,बहू बेटियां शौच के लिये बाहर खुले स्थान का प्रयोग करती है। यही वह स्थान व क्षण होता है, जिसमें अनेक प्रकार की दुर्घटनाओं को भी आमंत्रित करती है, जैसे सांप व अन्य जहरीले कीड़े–मकोड़े काटने की घटना हो या उनकी इज्जत और आबरू पर होने वाले हमले की बात हो। छ.ग. की महिलाएं इन समस्याओं से अपने दिन–प्रतिदिन की दिनचर्या के साथ दो–चार होती है। इस पीड़ा को राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह ने गहराई से समझा और संपूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम के क्रियान्वयन में उनकी गहरी रूचि लेने के कारण ही यह सब हो रहा है। वे तो चाहते है, कि संपूर्ण छ.ग. में इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के द्वारा घर–घर में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोग स्वच्छ शौचालय का निर्माण करें और इस दिशा में उन्होंने सभी जिलों के कलेक्टरों को विशेष पत्र भी लिखा है, लेकिन यह उनके लिये सुखद प्रसंग रहा, कि कम से कम उनके निर्वाचन क्षेत्र का जिला राजनांदगांव में उनकी भावना एवं स्वप्नों के अनुरूप इस कार्यक्रम में अपनी बढ़त हासिल कर लिये है। आज मख्यमंत्री सगर्व यह कहते है,कि उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र के जिले में गांव के बहू बेटियों को यह सुविधा मुहैय्या कराने में सफलता हासिल की है।

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत ऐसे ही एक निर्मल ग्राम शिवपुरी में संकल्प पाठन कराते हुए कलेक्टर श्री गणेश शंकर मिश्रा ।

मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह जी ने इस कार्यक्रम को नारी अस्मिता और नारी स्वाभिमान के सामने जोड़ा है। गांव गांव में संपूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम के तहत जलवाहित शौचालय का निर्माण किया जाना एक कठिन ही नहीं अपितु दुष्कर कार्य था। लोगों का रूझान इसके प्रति नही था । उन्हें यह समझाने में भारी मशक्कत करनी पड़ी, कि 125.00 रूपये का अंशदान करके 500 शासकीय अनुदान के रूप में प्राप्त करने वाली इस योजना का क्रियान्वयन क्यों आवश्यक है, जैसे जैसे लोगों ने इस योजना में अपनी हिस्सेदारी निभाना प्रारंभ किये, एक क्षण यह भी आया, कि जब गांव में सभी लोगों के यहां स्वच्छ शौचालय बना तो लोग इसके उपयोग करने से कतराते थे, वे तैयार नहीं थे इसका उपयोग किया जावे तथा इसका प्रयोग वे अपने घर के सामान, छेना, लकड़ी आदि रखने के लिये करने लगे । उन्हें यह बात अधिक अच्छी लगती थी कि लोटा लेकर बाहर जाएं । तब एक चुनौती जिला प्रशासन ने स्वीकार किया तथा गांव गांव में कलेक्टर स्वयं अपने सदल–बल के साथ भ्रमण कर ग्रामवासियों की बैठक लेना, ग्राम सभा आहूत करना, महिला स्व सहायता समूह से संपर्क कर उन्हें दिशा–निर्देश और समझाईश देना इस प्रकार श्रृंखला प्रारंभ हुई समझाईश के एक दौर की । महिलाओं को भावनात्मक रूप से इस मुद्दा के साथ में जोड़ा गया । कलेक्टर ने अपने संबोधनों में सभी स्थानों पर इस बात पर जो दिया कि बहू और बेटियों की इज्जत चाहे पैसे वालों की हो या चाहे गरीब व्यक्ति की हो एक बराबर ही होती है, और इसीलिये गांव की महिलाएं भले ही निर्धन परिवार की हो, लेकिन उनकी बहू –बेटियों का ग्रामों में उतना ही महत्व है, जितना पैसे और कोठी वालों की । इस गात ने सर्वहारा वर्ग को प्रभावित किया तथा उन लोगों ने हामी भरनी प्रारंभ कर दिये। दूसरा हथियार के रूपे में उपयोग किया गया वह था मां बम्लेश्वरी के कसम खिलाने का गांव गांव में अंचल की प्रसिद्ध देवी मां बम्लेश्वरी डोंगरगढ़ वाले की विशेष पूजा अर्चना होती है और हर गांव मेंएक साथ खड़ा करके यह संकल्प दिलवाया गया कि मैं मांबम्लेश्वरी की शपथ लेती हूं कि भविष्य में कभी भी शौच के लिये अकेली बाहर नहीं जाऊंगी। घर में नियमित शौचालय का उपयोग करूंगी। हर गांव के सरपंचों को जिन्होंने इस दिशा में अच्छा काम किया है उनको शाबासी भी दी गई।

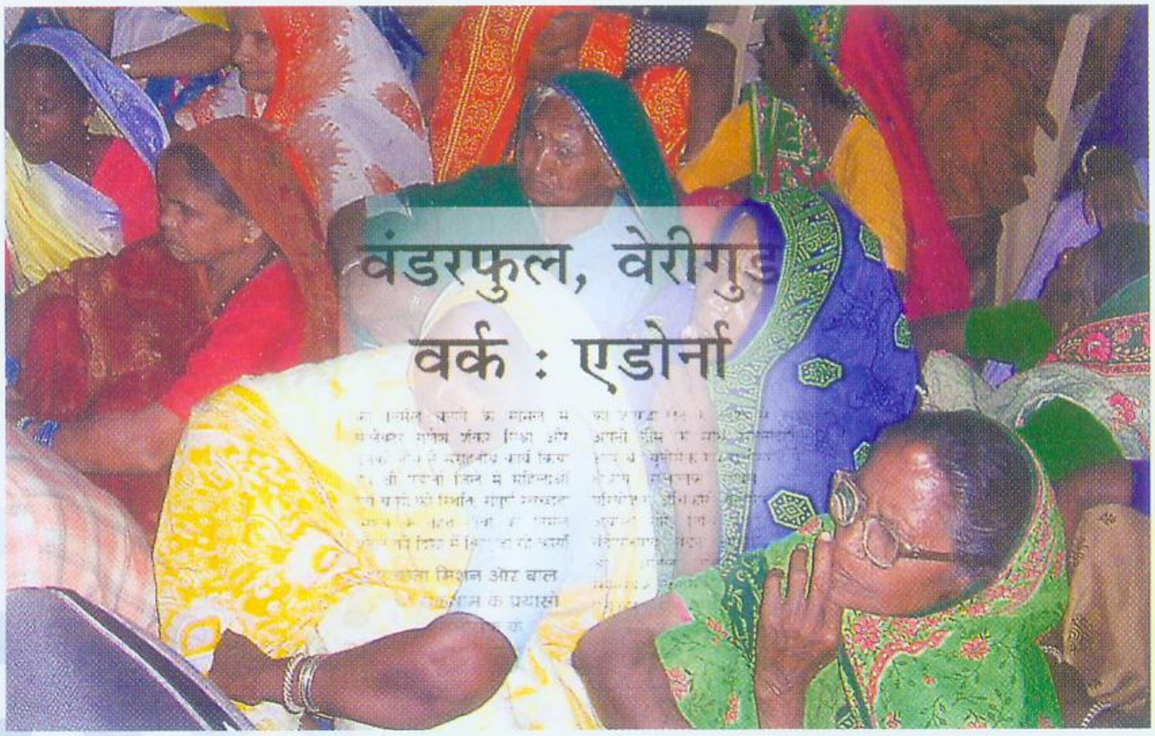

स्वच्छता मिशन और बाल विवाह रोकथाम के प्रयासों को यूनीसेफ के डायरेक्टर ने सराहा

निर्मल ग्राम कोहका का एक दृश्य

जिले के शत–प्रतिशत घरों में शौचालय निर्माण वाले निर्मल ग्रामों की सूची :.................

क्रमांक	विकासखंड का नाम	ग्राम पंचायत का नाम	आश्रित ग्राम
1	राजनांदगांव	कोटराभांठा	–
2	डोंगरगांव	ढाबा	मलईडबरी
3	डोंगरगांव	कोहका	–
4	छुरिया	सड़कचिरचारी	–
5	खैरागढ़	डोकराभांठा	खैरबना
6	खैरागढ़	दिलीपपुर	–
7	छुईखदान	घिरघोली	गभरा,कोटरासरार
8	छुईखदान	साल्हेवारा	–
9	चौकी	मोंगरा	–
10	चौकी	गुंडरदेही	किलारगोंदी
11	मानपुर	बेरियामुकासा	राजाबोंरिया
12	मोहला	तेलीटोला	चिकाटोला, डुण्डेरा, केवटटोला
13	डोंगरगढ़	शिवपुरी	बाकलेड़ी